शेख़ फ़रीद – सबद ५३
फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥
मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥४९॥

सार: अपने वास्तविक स्वरूप को उजागर करने के लिए, रसायन विद्या की शक्तिशाली प्रक्रिया को अपनाएँ। केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, जीवन के अनुभवों से ही हम अपने सार को विकसित कर सकते हैं। जीवन हमें सार्वभौमिक कच्चे माल प्रदान करता है, समय, लालसा, भय, प्रेम, हानि और इच्छा। आंतरिक रसायन विद्या में संलग्न हुए बिना, यह तत्व अपरिष्कृत रह सकते हैं जिससे अनुत्पादक, दोहराव वाले स्वरूप उत्पन्न होते हैं। रसायन विद्या तब शुरू होती है जब हम अपने अहंकार को बढ़ाने के बजाय, सचेत रूप से अपनी जागरूकता से अनुभवों को रूपांतरित करते हैं। इस प्रक्रिया से दर्द गहराई में, सफलता विनम्रता में और इच्छा सचेत दिशा में परिवर्तित होती है और हम अपने भीतर की क्षमता को उजागर कर सकते हैं।

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥
फ़रीद कहते हैं कि ध्यान से देखो कि कैसे कपास को पीटकर धागा बनाया जाता है और तिल को पीसकर तेल निकाला जाता है। यह बदलाव इस बात के शक्तिशाली रूपक हैं कि कैसे हमारे कर्म और अनुभव हमारी अपनी आंतरिक रूपांतरण को आकार देते हैं।
कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥
गन्ना, काग़ज़, मिट्टी के बर्तन और कोयले के रूपांतरण पर विचार करो। यह प्रतीक है कि गन्ने को उसकी मिठास के लिए पीसा जाता है, काग़ज़ को गूदाकर कुछ नया बनाया जाता है, मिट्टी को आग में तपाकर मज़बूत बनाया जाता है और कोयले को जलाकर ऊर्जा मिलती है। यह ज़ोर देता है कि रूपांतरण के लिए हमारे दृष्टिकोण की व्यापकता और हमारे भीतर लचीलापन होना आवश्यक है।

मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥४९॥

जो लोग बिना सोचे-समझे व्यवहार करते हैं, उन्हें अंततः अपने कर्मों के परिणामों का सामना करना पड़ता है। यह उजागर करता है कि परिणाम किसी नैतिक निर्णय का नहीं बल्कि व्यक्ति की अपनी पसंद का एक स्वाभाविक नतीजा होते हैं। (४९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद 'आंतरिक नियम' की सशक्त अवधारणा प्रस्तुत करते हैं जिसके अनुसार कुछ भी संयोगवश या ज़बरदस्ती नहीं होता। हमारा हर चुनाव हमारे मन को आकार देता है और हमारी 'अंतरात्मा' के मूल स्वरूप को परिभाषित करता है। हमारे कर्म ही उन परिणामों को निर्धारित करते हैं जिनका हम अनुभव करते हैं, यह परिणाम कोई सज़ा नहीं बल्कि उन चीज़ों के अनिवार्य परिणाम होते हैं जिन्हें हमने अपने भीतर विकसित किया है। जिन अनुभवों का हम सामना करते हैं वह अक्सर उन्हीं प्रतिरूपों को दर्शाते हैं जिन्हें हमने स्वयं निर्मित किया है। इन सभी तरीक़ों से, जीवन हमें अपने रूपांतरण की यात्रा को पहचानने और अपनाने के लिए सशक्त बनाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com